16 / 01 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

देश और धर्म के घूघंट के पर्दे के पार,
खुदा दोस्त से मधुर मिलन मनाने
का अनुभव

➢➢ अविनाशी प्रीत का नाता निभाने आई मैं आत्मा, संगम पर फरिश्तों की महफ़िल में...

➳ _ ➳ देश और धर्म के घूँघट के पर्दे को पार कर...

➳ _ ➳ विश्व के कोने कोने से आये हुए गॉडली फ्रेंड्स...

→ और मधुर मिलन की सौगाते लुटाता,

→ हर एक से मधुर मिलन मनाता...

→ खुद परमधाम से चलकर आया मेरा खुदा दोस्त...

- सम्मुख बैठकर बतियाता हैं...
- हँसता-हंसाता हैं....
- हर आत्मा को...
- कल्प-कल्प की अधिकारी आत्मा बनाता हैं ...

➳ _ ➳ डायमंड हॉल में बाप दादा के सम्मुख बैठी...

➳ _ ➳ अव्यक्त मिलन मनाती मैं आत्मा...

→ खुदा दोस्त को सुना रही हूँ, दिल का हर पैगाम...

→ भाषा का बंधन ही नही हैं, भावों की झड़ी सी लगी हैं...

→ मुझ आत्मा को भरपूर करने वाला...

→ एक ऐसा रूहानी सम्बन्ध...

- जो हर संबध से मीठा है...
- गहरा हैं, अविनाशी हैं...
- जिस स्नेह की एक एक बूंद की...
- दुनिया की हर आत्मा प्यासी है...
- मैंने उस स्नेह का पूरा सागर पाया हैं...
- उस स्नेह को लुटाने अव्यक्त वतन वासी...
- आज व्यक्त वतन में आया हैं...

➳ _ ➳ डायमंड हॉल में बापदादा, हर एक आत्मा के साथ युगल रूप में...

→ रूहानी जादूगर के साथ...

→ हर आत्मा मिलन की मस्ती में चूर है...

→ हर तरफ बस मेरे बाबा का रुहानी-सा नूर हैं...

→ ख़ुशी में नाचते गाते ये गॉडली फ्रेंड्स...

→ और हर एक की विशेषता के गीत गाते बापदादा...

→ जितना मेरे साथ, उतना ही सबके साथ...

→ एक ही समय में बतियाते बापदादा...

- मैं आत्मा स्नेह में डूबती जा रही हूँ...
- गहरे और भी गहरे...

➳ _ ➳ अशरीरी होकर मै आत्मा फ़रिश्ता बन...

➳ _ ➳ उड़ चली सूक्ष्म वतन की ओर बापदादा का हाथ हाथों में लेकर...

→ खुदा दोस्त के सामने...

→ मन की सारी दुविधाए साझा कर रही हूँ...

→ खुदा दोस्त को सब कुछ बताकर...

→ क्लियर, केयरफुल और चीयर फुल बनती जा रही हूँ ...

→ अब मैं फ़रिश्ता उतर आया हूँ...

→ एक बार फिर से,

→ विश्व ग्लोब पर,

→ और देख रहा हूँ...

→ आकाश में छाए बादलों की भांति...

→ हर तरफ फैले है फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते...

→ मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर...

→ सब से अब केवल एक ही आवाज आ रही हैं...

- मेरा बाबा आ गया...
- मीठा बाबा आ गया...
- प्यारा बाबा आ गया...

➳ _ ➳ हमने देखा हमने पाया वो भोला भंडारी...

➳ _ ➳ इसी भाग्य के नशे में चूर मैं आत्मा...

→ अब उड़ चली परम धाम की ओर..

→ खुदा दोस्त से अचल अडोल बनने का वरदान पाने...

- मैं आत्माशक्तियों से स्वयं को भरपूर कर रही हूँ...
- क्योंकि मैं ही साक्षात्कार मूर्त हूँ...
- कल्प कल्प का निश्चित फ़रिश्ता हूँ...
- संगम पर खुदा दोस्त से मंगल मिलन मनाने की
- कल्प कल्प की अनुभवी आत्मा हूँ...